केम रे झंपाए अंग

केम रे झंपाए अंग ए रे झालाओ, वली वली वाध्यो विख विस्तार।
जीव सिर जुलम कीधो फरी-फरी, हठियो हरामी अंग इंद्री विकार।।

झांप झालाओ हवे उठतियो अंगथी, सुख सीतल अंग अंगना ने ठार।
बाल्या वली वली ए मन ए कबुधें, कमसील काम कां कराव्या करतार।।

गुण पख इंद्री वस करी अबलीस ने, अंगना अंग थाप्यो दई धिकार।
अर्थ उपले एम केहेवाइयो वासना, फरी एणे वचने दीधी फिटकार।।

मांहेले माएने जोपे ज्यारे जोइए, त्यारे दीधी तारुणी तन तछकार।
कलकली महामती कहे हो कंथजी, एवा स्या रे दोष अंगनाओं ना आधार।।